स्कूली शिक्षा में आकलन : तब और अब

प्रेम लता भट्ट

किसी बच्चे के स्कूली जीवन में आकलन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह यह निर्धारित करने की प्रक्रिया है कि क्या कोई बच्चा किसी अक्षमता से ग्रस्त है और उसे विशेष शिक्षा तथा सम्बन्धित सेवाओं की आवश्यकता है। वह ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम विकसित करने का पहला कदम है जो उस बच्चे की सीखने में सहायता करेगा। अक्षमता वाले किसी बच्चे के लिए किसी विशेष शिक्षा या सम्बन्धित सेवाओं का प्रारम्भिक प्रावधान करने के पहले, एक सम्पूर्ण तथा व्यक्तिगत प्रारम्भिक आकलन किया जाना जरूरी है और ऐसे विद्यार्थियों का कम से कम तीन साल में एक बार पुनर्मूल्यांकन किया जाना जरूरी है।

वास्तव में, आकलन में किसी बच्चे के काम करने और सन्दिग्ध अक्षमता के सभी क्षेत्रों में विकास के बारे में विभिन्न स्रोतों से जानकारी, जिसमें माता-पिता के द्वारा प्रदान की गई जानकारी भी शामिल रहती है, एकत्रित करना निहित होता है। यह आकलन संज्ञानात्मक, व्यवहारगत, शारीरिक तथा विकासात्मक कारकों के साथ ही अन्य क्षेत्रों की पड़ताल कर सकता है। इस समस्त जानकारी का उपयोग बच्चे की शैक्षिक आवश्यकताओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है।

स्कूल में एक सम्पूर्ण तथा व्यक्तिगत शैक्षणिक आकलन अनेक महत्त्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति करता है, जैसे कि :

1. **पहचान** : स्कूली शिक्षा में आकलन उन विद्यार्थियों की पहचान कर सकता है जिन्हें सीखने में देर लगती है या अन्य समस्याएँ होती हैं और जिनके कारण उन्हें विशेष शिक्षा तथा सम्बन्धित सेवाओं की आवश्यकता हो सकती है। यह शिक्षक को तथा साथ ही विद्यार्थियों को उनके सुधार तथा उज्जवल भविष्य के लिए अनोखी दृष्टि देता है। सीखने वाले, स्कूल के दौरान उनमें अपने प्रदर्शन के आधार पर अपनी समस्याओं को बहुत आसानी से पहचान सकते हैं।

2. **पात्रता** : आकलन यह निर्धारित करता है कि क्या आपका बच्चा अक्षमताओं वाले व्यक्तियों के शिक्षा अधिनियम (इण्डीविजुअल्स विद डिसएबिलिटीज ऐजुकेशन ऐक्ट - आई.डी.ई.ए.) के अन्तर्गत आने वाली किसी अक्षमता से ग्रस्त है और इस कारण विशेष शिक्षा तथा सम्बन्धित सेवाएँ प्राप्त करने का पात्र है।

3. **विशेष व्यक्ति-उन्मुख शिक्षा कार्यक्रम (इण्डीविजुअलाइज्ड ऐजुकेशन प्रोग्राम - आई.ई.पी.) की योजना बनाना** : स्कूली आकलन ऐसी जानकारी प्रदान करता है जो स्कूल को उस बच्चे के लिए उपयुक्त आई.ई.पी. विकसित करने में मदद कर सकती है।

4. **शिक्षण की रणनीतियाँ** : आकलन यह पता करने में सहायता कर सकता है कि किसी बच्चे को सीखने में मदद करने के लिए कौन-सी रणनीतियाँ सबसे अधिक कारगर हो सकती हैं।

5. **प्रगति को मापना** : स्कूली आकलन आपके बच्चे की शैक्षिक प्रगति मापने के लिए एक आधार-रेखा स्थापित करता है।

आजकल एन.सी.एफ.-2005, शिक्षा के अधिकार का अधिनियम (राइट टु ऐजुकेशन ऐक्ट) तथा सतत और व्यापक मूल्यांकन के सन्दर्भ में स्कूलों की आकलन व्यवस्था परिवर्तित हो रही है। स्कूल की आकलन प्रक्रिया बच्चों के लिए उपयुक्त शैक्षणिक कार्यक्रम विकसित

करने के लिए एक आधार स्थापित करती है। जब हम पारम्परिक मूल्यांकन व्यवस्था पर गौर करते हैं तो हम पाते हैं कि वास्तविक सीखने का परिणाम दे सकने की दृष्टि से यह सबसे कारगर व्यवस्था नहीं हैं और इसके अनेक नुकसान हैं जो वास्तविक सीखने को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं। पारम्परिक आकलन व्यवस्था पूरी तरह से बौद्धिक ढंग से सीखने पर केन्द्रित रहती है और अनुभवजन्य सीखने की उपेक्षा करती है।

पारम्परिक आकलन व्यवस्था की कुछ प्रमुख विशेषताएँ ये थीं:

1. आकलन सत्र के अन्त में परीक्षा के रूप में होता था।
2. वह विषय तथा कक्षा पर आधारित रहता था।
3. एक ही कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए एक-सा प्रश्नपत्र होता था।
4. वह व्यवस्था विद्यार्थियों में तनाव पैदा करती थी और उन पर दबाव डालती थी।
5. वह "ट्यूशन के लिए जाओ" के चलन को बढ़ावा देती थी।

वास्तव में, आकलन उतना ही पुराना है जितनी पुरानी शिक्षा स्वयं है। वह सिखाने तथा सीखने की प्रक्रिया का अन्तिम चरण है। पारम्परिक रूप से, आकलन एक बहुत कड़ी गतिविधि रही है जो विद्यार्थियों में खासा भय पैदा करती थी। परन्तु, बदलते हुए दौर के साथ परीक्षा की पारम्परिक पद्धति भी बदल गई है।

अब, स्कूल में आकलन की आधुनिक अवधारणा काफी प्रगतिशील तथा वैज्ञानिक है। शिक्षाविदों ने विभिन्न शैक्षिक नीति दस्तावेजों के प्रकाश में आकलन की एक नई पद्धति सी.सी.ई. (कंटीनुअस ऐण्ड कॉम्प्रीहैन्सिव इवैल्युएशन) प्रारम्भ की है, क्योंकि स्कूली शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर एन.सी.ई.आर.टी. के विचार-विमर्श पेपर (2005) ने शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को ऊपर उठाने में मूल्यांकन की भूमिका का नीचे व्यक्त किए गए तरीके से वर्णन किया है।

मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य, जैसी उसकी शिक्षा आयोग (1964-66) द्वारा कल्पना की गई थी और जिसे एन.पी.ई., 1986 में फिर से दोहराया गया था, राष्ट्रीय तथा राज्यों के स्तरों पर शैक्षिक उपलब्धि के स्तरों का पता करना और उन्हें धीरे-धीरे ऊपर उठाना था। इसलिए, मूल्यांकन को व्यापक रूप से शिक्षा की गुणवत्ता में, तथा विशेष रूप से सीखने-सिखाने में सुधार करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण की तरह निर्मित किया जाना चाहिए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रमुख अवयवों में से एक सीखने वालों की उपलब्धियों की गुणवत्ता है जिसे सीखने वालों, शिक्षकों तथा पालकों के लाभ के लिए फीडबैक की विधि द्वारा कारगर तरीके से पता किया जाना चाहिए। आजकल, मूल्यांकन को व्यवस्था की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में उपयोग किया जाता है जिसे वर्ष के अन्त में ली जाने वाली परीक्षाओं तथा वर्ष के दौरान ली जाने वाली लघु-परीक्षाओं (टैस्ट्स) आदि के माध्यम से पूरा किया जाता है। सीखने वालों की प्रगति का उचित मूल्यांकन करने के लिए केवल परीक्षाओं पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए। आकलन के अन्य स्वरूपों जैसे व्यक्तिगत तथा सामूहिक कार्यों को करने के दौरान निरीक्षण, समूह में सम्बन्धों की संरचना (सोशियोग्राम) तथा साथियों द्वारा योग्यता-निर्धारण आदि का भी उपयोग किया जा सकता है। इस मूल्यांकन के परिणाम विशेष समयों पर विद्यार्थी की उपलब्धि, जैसी कि वह परीक्षण के उपयोग किए गए उपकरणों द्वारा प्रकट होती है, दर्शाते हैं। यह पूरी गतिविधि सीखने वालों, शिक्षकों और पालकों को निश्चित फीडबैक प्रदान करने के उपकरण के बजाय सिर्फ कर्मकाण्ड की एक रस्म की तरह की जाती है। इस प्रचलन में सुधार के उपाय, खासकर खामियों को दूर करने वाले शिक्षण के रूप में, दुर्लभ ही होते हैं। परीक्षा तथा मूल्यांकन का पूरा लाभ उठाने के लिए परिणामों की व्याख्या नीचे दिए गए तरीके से की जाना चाहिए :

1. सीखने वाले के द्वारा अपनी ताकत और कमजोरी जानने के लिए तथा खामी को जल्दी से जल्दी पूरा करने की प्रेरणा पाने के लिए।

2. शिक्षक के द्वारा एक ओर विद्यार्थियों के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए तो दूसरी ओर उसके द्वारा उपयोग की गई सिखाने-सीखने की रणनीति की प्रभावोत्पादकता का आकलन करने के लिए। इसका विश्लेषण सीखने वालों की अलग-अलग श्रेणियों के साथ अलग-अलग ढंग से काम करने की दृष्टि से किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को निम्न प्रकार से सीखने की प्रक्रिया में संलग्न रखा जा सके-

अ. मेधावी विद्यार्थियों को संवर्धन कार्यक्रम के माध्यम से लक्ष्य-उन्मुख ढंग से सीखने में संलग्न किया जा सकता है।

ब औसत विद्यार्थियों को, छोटे समूहों को विशेष कार्य देकर, साथियों के साथ सीखने में लगाया जा सकता है।

स. कमजोर विद्यार्थियों की समस्या का उचित ढंग से निदान किया जा सकता है और, नई शिक्षण इकाइयों पर काम शुरू करने से पहले, उनके लिए उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है।

मूल्यांकन की उपरोक्त पद्धति समय-समय पर होने वाले व्यापक मूल्यांकन का हिस्सा होगी और यह सीखने वालों को ऐसी योग्यताओं, बुनियादी कौशलों, वांछित दृष्टिकोण तथा मूल्यों में प्रवीणता प्राप्त करने में मदद कर सकती है जो उनके जीवन में स्थापित होने तथा देश के अच्छे और योगदान करने वाले नागरिक बनने में उनकी सहायता कर सकते हैं। किताबों से प्राप्त जानकारी को रटकर याद रखने के चलन को कम करने और उसके बजाय सीखी गई अवधारणाओं, कौशलों तथा योग्यताओं को विशेष स्थिति में उपयोग करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सकते हैं। इसके अलावा, पाठ्यपुस्तकों तथा शैक्षणिक सामग्री को इस लक्ष्य की ओर मोड़ा जाना होगा; शिक्षकों को पूरी निष्ठा से इस कार्य की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रेरित किया जाना होगा तथा इसके लिए उन्हें अधिकार भी दिया जाना होगा। इस पर निगरानी रखने की एक गम्भीर विधि की आवश्यकता को भी कम करके नहीं आँका जा सकता।

इस प्रकार हम पाते हैं कि आकलन की नई व्यवस्था का रुख "सीखने के लिए आकलन" की ओर है, जबकि आकलन की पारम्परिक व्यवस्था का रुख "सीखने के आकलन" की ओर था, क्योंकि सीखने के लिए आकलन तब होता है जब सीखने की प्रक्रिया चल रही होती है। ये ऐसे आकलन हैं जो हम सीखने-सिखाने के पूरे दौर में करते रहते हैं ताकि विद्यार्थियों की जरूरतों को जाना जा सके, हम शिक्षण में अपने अगले कदम की योजना बना सकें, विद्यार्थियों को ऐसा फीडबैक प्रदान कर सकें, जिसका उपयोग वे अपने काम की गुणवत्ता सुधारने के लिए कर सकते हैं तथा विद्यार्थियों को सफलता की ओर उनकी यात्रा का स्वयं नियंता होने की अनुभूति का एहसास करने और उसे देखने में मदद कर सकें। प्रत्येक आकलन विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धि में आए अन्तरों को दिखाता है तथा अगली बार वे कैसे बेहतर कर सकते हैं इसकी ओर संकेत करता है। इन अवसरों पर ग्रेडिंग की व्यवस्था को एक तरफ रख दिया जाता है। सीखने के आकलन वे आकलन होते हैं जो ऐसा मान लिए जाने के बाद कि सीखने की गतिविधि पूरी हो चुकी है, यह पता करने के लिए किए जाते हैं कि वास्तव में सीखना घटित हुआ या नहीं। वे कक्षा के बाहर के लोगों के द्वारा विद्यार्थियों के सीखने के स्तर के बारे में वक्तव्य देने के लिए उस समय उपयोग किए जाते हैं जब विद्यार्थियों की सिफारिश करना होती है या कार्यक्रमों के बारे में निर्णय लिए जाना होते हैं। राज्य-स्तरीय आकलन, स्थानीय मानकीकृत परीक्षाएँ तथा कालेजों की प्रवेश परीक्षाएँ ऐसी बाहरी परीक्षाएँ हैं जो ऐसा करती हैं। लेकिन हम कक्षा के भीतर भी तब ऐसे आकलन करते हैं जब हम किसी विद्यार्थी के रिपोर्ट-कार्ड में दिए जाने वाले ग्रेड को निर्धारित करने के लिए प्रमाण एकत्रित करते हैं। इकाइयों की अन्तिम परीक्षाएँ तथा महत्त्वपूर्ण प्रॉजेक्ट अक्सर यह प्रयोजन पूरा करते हैं।

ऊपर दी गई जानकारी के अतिरिक्त, आकलनों का उपयोग करने वालों के लिए पारम्परिक आकलन तथा वर्तमान आकलन के बीच के कुछ प्रमुख अन्तर आगे

दर्शाए गए हैं :

आकलन उपयोगकर्ता	आकलन अब	आकलन तब
विद्यार्थी	क्या मेरे प्रदर्शन में समय के साथ सुधार हो रहा है? क्या मैं जानता हूँ कि सफल होने का अर्थ क्या है? आगे मुझे क्या करना चाहिए? मुझे कैसी मदद की आवश्यकता है?	क्या मैं उस स्तर पर सफल हो रहा हूँ जिस पर मुझे होना चाहिए? क्या मुझमें सफल होने की क्षमता है? मैं अपने सहपाठियों के सापेक्ष कैसा कर रहा हूँ? क्या मेरा सीखना उसमें लगने वाले प्रयास के हिसाब से सार्थक है?
शिक्षक	इस विद्यार्थी की आवश्यकता क्या है? इन विद्यार्थियों की आवश्यकता क्या है? विद्यार्थियों के मजबूत पहलू क्या हैं जिनके आधार पर आगे निर्माण किया जा सकता है? मुझे अपने विद्यार्थियों को समूहों में कैसे बाँटना चाहिए? क्या मैं जरूरत से ज्यादा तेज जा रहा हूँ? या जरूरत से ज्यादा धीमा? जरूरत से ज्यादा दूर? या पर्याप्त दूर तक नहीं जा रहा हूँ?	मैं रिपोर्ट कार्ड पर क्या ग्रेड लिखूँ? किन विद्यार्थियों की विशेष सेवा के लिए सिफारिश किए जाने की जरूरत है? शिक्षक पालकों को क्या बताएँगे?
पालक	हम बच्चे के सीखने में सहायता करने के लिए घर पर क्या कर सकते हैं? क्या मेरा बच्चा नई चीजें सीख रहा है?	क्या मेरा बच्चा कक्षा के साथ चल पा रहा है? क्या यह शिक्षक अच्छा काम कर रहा है? क्या यह अच्छा स्कूल है?
प्राचार्य		क्या शिक्षण से उचित परिणाम मिल रहे हैं? क्या हमारे विद्यार्थी कार्यस्थल (वर्कप्लेस) के लिए या सीखने के अगले कदम के लिए तैयार हैं? हम सफलता हासिल करने के लिए संसाधनों (इमारतों आदि) का आबंटन किस तरह करें?
अधीक्षक		क्या शिक्षण के हमारे कार्यक्रम वांछित परिणाम दे रहे हैं? क्या हर इमारत समुचित परिणाम दे रही है? किन स्कूलों को अतिरिक्त संसाधनों की आवश्यकता है? हम सफलता हासिल करने के लिए जिले के संसाधनों को किस प्रकार आबंटित करें?

आकलन उपयोगकर्ता	आकलन अब	आकलन तब
राज्य का शिक्षा विभाग		क्या राज्य भर में शिक्षा कार्यक्रम परिणाम दे रहे हैं? क्या अलग-अलग जिले परिणाम दे रहे हैं? कौन वार्षिक रूप से प्रगति करने के लिए पर्याप्त काम कर रहा है, और कौन नहीं कर रहा है? हम सफलता हासिल करने के लिए जिले के संसाधनों को किस प्रकार आबंटित करें?
नागरिक		क्या हमारे विद्यार्थी ऐसे तरीकों से उपलब्धियों को हासिल कर रहे हैं जो उन्हें उत्पादक कामगार तथा नागरिक बनने के लिए तैयार करते हैं?

अन्त में, हम कह सकते हैं कि स्कूलों में पिछली आकलन विधियाँ आकलन के रचनात्मक उपयोगों के बारे में सोचने का एक पारम्परिक तरीका थीं, जबकि वर्तमान आकलन उससे आगे जाता है।

Bibliography:

McCallum, B. (2000). Formative Assessment: Implications for Classroom Practice.

Myers, J. and Burnett, C. (2002).Teaching English 3-11. New York: Continuum, 175

National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2006). National Focus Group on Teaching of English. Position Paper. New Delhi: NCERT, 1-18

National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2006) National Focus Group on Teaching of Indian Languages. Position Paper. New Delhi: NCERT, 14-22, 30-32

National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2005). National Curriculum Framework 2005. New Delhi: NCERT, 5

Siraj-Blatchford, I., Sylva, K., Muttock, S., Gilden, R. and Bell, D. (2002) Researching Effective Pedagogy in the Early Years. London: DfES, 7.

Weigle, Sara C. (2002) Assessing Writing. Cambridge: Cambridge University Press.199

Wolcott, W. (with Legg, S. M.) (1998). An overview of writing assessment: Theory, research and practice. Urbana, IL: National Council of Teachers of English, 4 Prepared by the IRA/NCTE Joint Task Force on Assessment. (1994). Standards for the assessment of reading and writing, International Reading Association and National Council of Teachers of English, Illinois, 13

प्रेम *लता भट्ट वर्तमान में उत्तरकाशी में डुण्डा के शासकीय प्रायमरी स्कूल में सहायक शिक्षक हैं। वे प्रायमरी स्कूल शिक्षक के रूप में पिछले 15 वर्षों से कार्य कर रही हैं। उनसे premlatabhatt@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : सत्येन्द्र त्रिपाठी*